प्रातः क्लास 14-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यहां सभी बैठे हुये हैं कोई तो देहअभिमानी होंगे कोई तो देही अभिमानी होंगे। कोई सेकण्ड में देही अभिमानी कोई सेकण्ड में देह अभिमानी होते रहेंगे। ऐसे तो कोई कह न सके कि हम सारा समय देही अभिमानी हो बैठे हैं। नहीं। बाप समझाते हैं कोई समय देह अभिमानी कोई समय देही अभिमानी होंगे। अभी बच्चे यह तो जानते हैं हम आत्मायें अपने शरीर को छोड़ जावेंगे अपने घर। बहुत ही खुशी से जाना है। सारा दिन चिन्तन ही यह करते हैं हम शान्तिधाम में जावें। क्योंकि बाप ने रास्ता तो बताया है। और कोई भी कब भी इस विचार से नहीं बैठता है। यह शिक्षा किसको मिलती ही नहीं है। ख्याल भी नहीं होगा। तुमसमझते हो यह दुःखधाम है। अभी बाप ने सुखधाम जाने का रास्ता बताते हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही सम्पूर्ण बन यथा योग शान्तिधाम चले जावेंगे। उनको ही मुक्तिधाम कहा जाता है। जिसके लिए ही मनुष्य गुरु करते हैं। परन्तु मनुष्यों को बिल्कुल ही पता नहीं है। मुक्ति जीवन मुक्ति क्या चीज़ है कोई भी नहीं जानते। क्योंकि यह नई बात है। तुम बच्चे ही समझते हो अभी हमको घर जाना है। बाप कहते हैं पवित्र बनो याद की यात्रा से। तुम पहले2 जब आये थे श्रेष्ठाचारी दुनिया में तो तुम सतोप्रधान थे। आत्मा सतोप्रधान थी। कोई के साथ कनेक्शन भी पीछे होगा। जब गर्भ में जावेंगे तब सम्बन्ध में आवेंगे। तुम जानते हो अभी हमारा यह अन्तिम जन्म है। हमको वापस घर जाना है। पवित्र बनने बिगर हम जा नहीं सकते। ऐसे2 अन्दर में बातें करनी होती है। क्योंकि बाप का फरमान है उठते-बैठते, घूमते-फिरते बुधि में यही ख्यालात रहे कि हम सतोप्रधान आये थे अभी फिर सतोप्रधान बनकर घर जानाहै। सतोप्रधान बनना है बाप की याद से। क्योंकि बाप ही पतितपावन है। हम बच्चों को युक्ति बताते हैं कि तुम पावन कैसे हो सकेंगे। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को तो बाप ही जानते हैं। और कोई बर्थाटी ह नहीं। बाप ही मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है, सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। भक्ति कहां तक चलती है, वह भी बाप ने समझाया है। इतना समय ज्ञान मार्ग इतना समय भक्ति मार्ग चलता है। यह सारा ज्ञान अन्दर में टपकना चाहिए। जैसे बाप की आत्मा में ज्ञान है वैसे तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान है। शरीर द्वारा ज्ञान सुनती और सुनाती है। शरीर के बिगर तो आत्मा बोल न सके। इसमें प्रेरणा वा आकाशवाणी आद की बात नहीं होती। भगवानुवाच है तो जरूर मुख चाहिए ना। रथ चाहिए। घोड़े, गदहे का तो रथ नहीं लेंगे। अभी हमको बाप को याद करते2 वापस घर जाना है। यहां तो रहना नहीं है। दूसरा कोई मनुष्य ऐसे नहीं समझता। तुम भी पहले समझते थे कलियुग 40 हजार वर्ष का है। अज्ञान नींद में सोये पड़े थे। अभी बाप ने जगाया है। भक्ति मार्ग के शास्त्रों के कारण मनुष्य अज्ञान घोर निंद्रा में है। तुम भी अज्ञान में थे। अभी ज्ञान मिला है। अज्ञान कहा जाता है भक्ति को। भक्ति भी आधा कल्प चलती है। भक्ति में अंधियारा हो जाता है। अब बच्चों को यह ख्याल करना है हम अपनी उन्नति कैसे करें। ऊंच पद कैसे पावें। अपने घर जावें और फिर नई राजधानी में आकर ऊंच मर्तबा पावें इसके लिए है याद की यात्रा। अपन को आत्मा तो जरूर समझना है। हम सभी आत्माओं का बाप परमात्मा है। यह तो बहुत ही सहज है। परन्तु मनुष्य पत्थर बुधि ऐसे हैं जो इतनी सहज बात को भी नहीं समझ सकते हैं। तुम मुरली में चला सकते हो। पत्थर बुधि और पारस बुधि, आयरन एजेड और गोल्डेन एजेड क्यों कहा जाता है। बाप ने समझाया है इस समय सभी तमोप्रधान बुधि बन गये हैं। अभी भ्रष्टाचारी नाम तो है ना। यह है रावण राज्य। इसलिए तुम्हारी बुधि भ्रष्टाचारी बन गई है। मनुष्य समझते हैं जो विकार में नहीं जाते हैं वह पावन है। जैसे सन्यासी है। बाप समझाते हैं वह तो अल्प काल के लिए पावन बनना है। दुनिया तो फिर भी पतित है ना। पावन दुनिया है ही सतयुग। पतित दुनिया में सतयुग जैसा पावन कोई हो नहीं सकता। वहां तो रावण राज्य विकार ही नहीं है। तो चक्र लगाते, घूमते फिरते बुधि में यह चिन्तन रहना चाहिए। बाबा में भी ज्ञान है ना। ज्ञान सागर है तो जरूर ज्ञान टपकता होगा। तुम भी ज्ञान सागर से निकली हुई नदियां हो।

वह तो स्वर सागर ही है। तुम स्वर सागर नहीं हो। तुम बच्चे तो पढ़ते हो। वास्तव में नदियां आदि की भी बात नहीं। नदियां कहने से फिर गंगा यमुना आदि कह देते। अभी तुम बच्चे समझते हो हम तो सभी भाई2 हैं। हम आत्माओं को बाप पढ़ा रहे हैं। भाई2 का अर्थ तो समझते हो। वह अर्थ को नहीं समझते। तुम अभी बेहद में खड़े हो। हम सभी आत्मायें एक बाप के बच्चे सभी भाई2 हैं। वह तो बिगर अर्थ ही ऐसे ही कह देते हम भाई2 हैं। तुम समझते हो हम सभी आत्मायें भाई2 हैं। सभी का बाप एक है। अभी हम आत्माओं को वापस अपने घर जाना है। घर है ब्रह्मण्ड, जहां अण्डे मिसल हम सभी आत्मायें रहती हैं। उनको निराकारी दुनिया भी कहते हैं। जहां से आत्मायें आकर इस शरीर रूपी तख्त पर विराजमान होती है। बहुत छोटी आत्मा है। साक्षात्कार होने से भी समझ न सके। बहुत सूक्ष्म बातें हैं। आत्मा निकलती है, जरूर कोई चीज़ है। बिन्दी मिसल है। कब कहते हैं टिपरी से निकल गई, कब कहते हैं इनकी आंखों से निकल गई। कोई का मुख खुल जाता है तो समझते हैं मुख से निकल गई। आत्मा कैसे आती-जाती है यह बाबा ने बताया नहीं है। आत्मा शरीर को छोड़ जाती है तो वह शरीर जड़ हो जाता है। फिर दूसरा जड़ शरीर में जाकर प्रवेश करती है तो चुस्त पुर होती है। मनुष्य तो है मिट्टी का पुतला। आत्मा को थोड़े ही ऐसे कहेंगे। तो यह है ज्ञान। चलते-फिरते बुधि में यह टपकना चाहिए। स्टुडन्ट की बुधि में सारा ज्ञान, पढ़ाई रहती है ना। तुम्हारा भी सारा दिन पढ़ाई का ही ख्यालात चलनी चाहिए। अच्छे स्टुडन्ट के हाथ में सदैव कोई न कोई किताब होगा, पढ़ते रहेंगे। बाप कहते हैं तुम्हारी भी यह अन्तिम जन्म है। सारा चक्र लगाकर अभी अन्त में आये हो तो बुधि में यही सुमिरण रहना चाहिए। धारणा कर फिर औरों को सुनाना चाहिए। कोई को तो धारणा होती ही नहीं है। स्कूल में भी नम्बरवार स्टुडन्ट्स तो होते ही हैं ना। सबजेक्ट्स भी बहुत होती है। यहां तो सबजेक्ट एक ही है। देवी देवता बनना है। यही पढ़ाई का चिन्तन चलता रहे। ऐसे नहीं पढ़ाई भूल जावे, और और ख्यालात चलती रहे। धंधे वाला होगा तो अपने धंधे में ही ख्यालात लगा रहेगा। स्टुडन्ट पढ़ाई में ही लगा रहेगा। तुम बच्चों को भी अपनी पढ़ाई में रहना है। कल एक निमंत्रण पत्र आया था। इन्टरनेशनल योग कानवेन्शन पर। तुम उन्हों को लिख सकते हो तुम्हारा यह तो है हठयोग। इनकी एमआबजेक्ट क्या है, इससे फायदा क्या होता है? हम तो राजयोग सीख रहे हैं। परमपिता परमात्मा जो ज्ञान का सागर है वह रचयिता हमको अपना और अपनी रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। अभी हमको वापस जाना है। मन्मनाभव। यह है हमारा मंत्र। हम बाप को और बाप के द्वारा जो वरसा मिलता है उनको याद करते हैं। तुम यह हठयोग आदि करते आये हो उनको एमआबजेक्ट क्या है? हमने अपना तो सुनाया कि हम यह सीख रहे हैं। तुम्हारे इन हठयोग से क्या मिलता है? ऐसा रेसपान्ड नटशेल में लिखना है। ऐसे2 निमंत्रण तो तुम्हारे पास बहुत ही आते हैं। आल रीलिजन कान्फ्रेन्स का तुमको निमंत्रण आवे, तुम बोलो आप का एमआबजेक्ट क्या है? हम तो यह सीख रहे हैं। अपना जरूर बताना चाहिए। क्योंकि यह राजयोग जो तुम सीख रहे हो इसको किसको भी पता नहीं है। बोलो हम यह पढ़ रहे हैं। हमको पढ़ाने वाला भगवान है। हम सभी ब्रदर्स हैं। हम अपने को आत्मा समझते हैं। बेहद का बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे ... ऐसे2 लिखना चाहिए। ऐसे लिखत बहुत अच्छी रीति छपाकर रख दो। फिर जहां2 कान्फ्रेन्स आदि होवहां भेज दो। तुम सभी से पूछ सकते हो। हम यह सीख रहे हैं तो मनुष्यों को पता पड़े। समझेंगे यह तो बहुत अच्छे फायदे की बात सीखते हैं। हम इस राजयोग से डबल सिरताज राजाओं का राजा, विश्व का मालिक बनते हैं। हर 5000 वर्ष बाद हम देवता बनते हैं फिर मनुष्य बनते हैं। 84 का चक्र है। ऐसे2 विचार सागर मथन कर फर्स्ट क्लास लिखत बनानी चाहिए। हम राजयोग सीख रहे हैं तो क्यों नहीं मनुष्यों को बतावें कि हम क्या सीख रहे हैं। उद्देश्य तुम से पूछते हैं। यह तो छपा हुआ रखा हो। हमारा एमआबजेक्ट यह है। तुम अपने हठयोग आदि का एमआबजेक्ट बताओ। इन से क्या प्राप्ती होगी। तुम तो फट से कहते हो हमको विश्व की बादशाही की प्राप्ती होती है। ऐसे लिखने से टेम्पटेशन होगी। इसमें कोई हठयोग वा शास्त्रार्थ करने की बात-

नहीं। शास्त्रार्थ का भी उन्हों को कितना अहंकार रहता है। शास्त्रों की अथार्टी समझते हैं अपन को। वास्तव में वह तो पुजारी है उनको क्या अथार्टी कहेंगे। अथार्टी तो पूज्य को कहेंगे। पुजारी को क्या कहेंगे। पुजारी होते हैं पुरानी दुनिया में। तो यह क्लीयर कर लिखना चाहिए हम क्या सीखते हैं। ब्रह्माकुमारी का नाम तो मशहूर हो गया है ना। तुम तो पूछ सकते हो इन हठयोग का एमआबजेक्ट क्या है। योग तो दो प्रकार के हैं। एक है हठयोग दूसरा है सहज राजयोग। वह तो कोई मनुष्य सीखा न सके। राजयोग एक ही परमात्मा सिखलाते हैं। बाकी यह तुम्हारी अनेक प्रकार के योग हैं मनुष्य मत पर। वहां देवताओं को तो किसकी मत की दरकार ही नहीं। क्योंकि वरसा लिया हुआ है। वह है देवतायें। अर्थात दैवी गुण वाले। है तो दो बाहें वाले मनुष्य इसलिए परन्तु दैवी गुण वाले हैं इसलिए देवता कहा जाता है। जिनमें दैवी गुण नहीं है उनको असुर कहा जाता है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। देवताओं का राज्य था। फिर वह कहां गया। 84 जन्म कैसे लिये सीढ़ी पर समझाना चाहिए। सीढ़ी बड़ी अच्छी है। जो तुम्हारे दिल में वह तुम्हारे सीढ़ी में है। जो सिको समझा नहीं सकते उनको कहेंगे जट है। जटलोग क्या पढ़ेंगे सारा मदार पढ़ाई पर है। पढ़ाई है सोर्स आफ इनकम। यह सब से ऊंची पढ़ाई। दी बेस्ट। दुनिया नहीं जानती कि दी बेस्ट कौन सी पढ़ाई है। इस पढ़ाई से मनुष्य से देवता डबल क्राउन बन जाते हैं। अब तुम डबल सिरताजधारी बनने पुरुषार्थ कररहे हो। पढ़ाई एक ही है। एक ही पढ़ाई से राजधानी स्थापन हो जाती है। राजा भी बनते हैं तो रंक भी बनते हैं। बाकी वहां दुःख की बात नहीं होती। मरते तो हैं ना। यहां कितने अनेक प्रकार के दुःख हैं। पम्मन, बिमारियां, अन्नाज नहीं मिलता, फ्लड्स आ जाते हैं। भल लखपति हैं, सन्यासी है पैदा तो भ्रष्टाचार से होते हैं। और बिमारियां रोग है ही। आज कोई ने धक्का खाया, कोई को मच्छर ने काटा, फोड़ा हुआ यह सभी दुःख हैं ना। नाम ही है रौरव नर्क। तो भी कहते हैं फ्लाना स्वर्ग में पधारा। अरे स्वर्ग तो आने वाला है। फिर कोई स्वर्ग में जा ही कैसे सकता। किसको भी समझाना तो बहुत ही सहज है। अब बाबा ने रस्ता प्रस्ताव दिया है। लिखना तो बच्चों का काम है। धारणा होगी तो लिखेंगे। मुख्य बात बच्चों को समझाते हैं अपन को आत्मा समझो अब वापस जाना है। हम सतोप्रधान थे तो खुशी का पारा पार न था। हम विश्व के मालिक थे। अभी फिर तमोप्रधान बने हैं। कितना सहज है। पायन्टस तो बहुत ही बाबा समझाते रहते हैं। अभी कलियुग है सतयुग था। 84 जन्म सतयुग वाले हो लेते हैं। यह बैठ अच्छी रीत समझाना है। न मानते हैं यह तो समझा जाता है यह हमारे कुल का ही नहीं हैं। पढ़ाई में दिन प्रति दिन आगे बढ़ना है। पीछे थोड़े ही हटना है। देवी गुणों के बदले आसुरी गुण धारण करना यह तो पीछे हटना हुआ ना। बाप कहते हैं विकारों को उड़ाते रहो। देवी-गुण धारण करो। बहुत ही हल्का रहना है। यह शरीर ही छी छी है। इनको भी छोड़ना है। हमको तो अब जाना है घर। बाप को याद न करेंगे तो हम गुल2 बनेंगे ही नहीं। बहुत ही सजायें खानी पड़ेंगी। आगे चल तुमको बहुत सा० होंगे। पूछेंगे तुमने क्या सर्विस की है। तुम कब कोर्ट में नहीं गये हो। बाबा ने तो सब अनुभव किया है देखा है। कैसे यह लोग चोरों को पकड़ते हैं कैसे चलते हैं। तो वहां भी बच तुमको सा० कराते रहेंगे। सजायें खाकर फिर पाई पैसे का पद पा लेंगे। टीचर को तो रहम आता है ना। यह नापास हो जावेगा। यह बाप को याद करने की सबजेक्ट सब से अच्छी है। जिससे पाप कटते जायेंगे। बाबा हमको पढ़ा हैं यह सुमिरण करते चक्र लगाते रहना चाहिए। स्टुडेन्ट टीचर को याद भी करते हैं और पढ़ाई भी बुधि में रहती है। टीचर ये योग तो जरूर होगा ना। बाप हमको पढ़ाते हैं यह बुधि में रहना चाहिए नाहम सब भाईयों का एक टीचर। वह है सुप्रीम टीचर। आगे चल बहुतों को मालूम पड़ेगा। धून लग जायेंगी। अहो प्रभु तेरी लीला – महिमा कर के मरेंगे। परन्तु पा तो कुछ नहीं सकेंगे। देह अभिमान में आने से ही उलटे कर्म करते हैं। बाप कहते हैं देहीअभिमनी होने से अच्छे कर्म करेंगे। है तो अब तुम्हारी वानप्रस्त अवस्था। वापस जाना ही पड़ेगा हिसाब किताब चुकुत करसब को जाना है। चाहे वा न चाहे जाना जरूर है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।